REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

समकालीन प्रतिनिधि उपन्यासों में राजनीति और संचार व्यवस्था

उपासना द्विवेदी[1] & डॉ. लता द्विवेदी[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

सारांश –

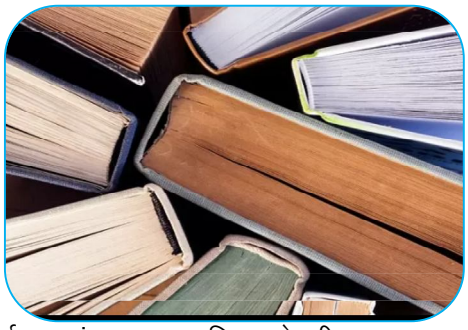

जनतांत्रिक शासन व्यवस्था में अन्य जनसंचार माध्यमों की तुलना में समाचार–पत्र प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वे चाहे तो सामान्य राजनेता को असामान्य बना सकते हैं या किसी भी राजनेता की छवि जनता में मलिन भी कर सकते हैं। किसी भी सत्ता को उखाड़ फेकने की ताकत समाचार–पत्रों में होती है। समाचार–पत्रों का प्रमुख कार्य समाजसेवा है। जन–जागरण करने का कार्य समाचार–पत्र करते हैं। आजादी की लड़ाई में समाचार–पत्रों ने प्रमुख भूमिका निभायी थी। लोगों में जन–चेतना देशप्रेम भरने का महान कार्य समाचार–पत्रों ने किया था। उदंड मार्तण्ड, बंगदूत, प्रजामित्र, केसरी, मूकनायक, जनता जैसे समाचार–पत्रों ने जनजागरण करने का महान कार्य किया है। प्रसिद्ध समाजसेवक डॉ. अम्बेडकर ने दलित पीड़ितों में जाग्रति लाने के लिए मूकनायक समाचार पत्र का ही सहारा लिया था। महाराष्ट्र में जनता में देशप्रेम की भावना जगाने का कार्य ''केसरी'' के माध्यम से किया गया था।

मुख्य शब्द – जनतांत्रिक, जनसंचार, राजनेता एवं उपन्यास।

प्रस्तावना –

आज के सम्पादकों के राजनेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध निर्माण हो गए हैं। वे नेताओं तथा मंत्रियों को नाराज करना नहीं चाहते। आज शत–प्रतिशत अखबार राजनीतिक पार्टी से जुड़े हुए हैं। राजनीतिक पार्टी से जुड़कर ही वे अपना तथा अपने पत्र का विस्तार कर सकते हैं। ''स्वराज जिन्दाबाद'' का दिवाकर कहता है, ''प्रधान सम्पादक सिन्हा जी अब शत–प्रतिशत इस प्रेस के मालिक बन गये हैं और वे मंत्री जी को नाराज रखना नहीं चाहते। वे अपने प्रेस को राजनीतिक पार्टी से भी अलग करना नहीं चाहते।''[1]

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में समाचारपत्रों का अनन्य साधारण महत्व है। लोकतंत्र की जड़ें मजबूत करने का काम समाचारपत्र करते हैं। समाचार–पत्र समाज का आईना होते हैं। समाज में घटित होने वाली हर घटना का चित्रण उसमें होता है। जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्रों का स्थान प्रमुख है। आज राजनीति में समाचार–पत्र प्रमुख भूमिका अदा कर रहे हैं। किसी भी राजनेता को राजनीति में विजय प्राप्त करनी हो तो समाचार पत्रों का सहारा लेना पड़ता है। जनता में राजनेताओं की छवि निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य समाचारपत्र ही करते हैं।

समाचार–पत्र जनता के सेवक हैं। वे न अपने मालिकों के प्रति उत्तरदायी हैं और न किसी सरकार या अधिकारी के प्रति सिर झुकाने को बाध्य हैं। वे यदि जवाबदेह हैं जो जनता के सम्मुख हैं। डॉ. कृष्ण बिहारी

मिश्र इस सम्बन्ध में कहते हैं, ''जनाधिकार, जनहित और जनस्वास्थ्य के लिए जब कभी खतरा या संकट उपस्थित हो उस समय यदि पत्रकार मौन रह जाए तो यह उनके लिए अक्षम्य अपराध की बात होगी।''[2]

सच्चा पत्रकार सच्चा समाजसेवक होता है। उसे जनसेवा करने के लिए अपनी अध्ययन सीमा को बढ़ाना पड़ता है। साहित्य भाषा के साथ ही राजनीति, अर्थशास्त्र और अन्य शास्त्रों का ज्ञान उसे रखना पड़ता है। वह निरंतर अध्ययनशील हो। मानसिक संकीर्णताओं और व्यक्तिगत कुंठाओं से मुक्त होकर सत्य को सीधे देखने का प्रयास करें। ''कंठ की स्वाधीनता पत्रकार के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सती के लिए सतीत्व जितना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक आवश्यक है पत्रकारों के लिए उन्मुख कंठ।''[3] वर्तमान पत्रकारों ने मुक्तकंठ से कलम चलायी तो प्रामाणिकता से वे जनसेवा कर पायेंगे।

विश्लेषण –

वर्तमानकालीन समाचार–पत्र सत्ताधारी नेताओं के गुनगान गाना ही अपना प्रमुख उद्देश्य मानने लगे हैं। वे नेताओं की हाँ में हाँ मिलाते–मिलाते सत्य की ओर आँखें मोड़ लेते हैं। नेताओं की तूती बजाने से इनको दोहरा लाभ मिलता है। सरकारी कागज के 'कोटे' में वृद्धि होती है और सरकारी विज्ञापन भी मिलता है।

वर्तमानकालीन राजनेता अपने विरोधी राजनेताओं की छवि मलिन करने के लिए अखबारों का सहारा लेते हैं। वे वैयक्तिक लांछन लगाकर विरोधियों को बदनाम करने का प्रयास करते हैं। दूरसंचार मंत्री प्रमोद महाजन शरद पवार को एलिजाबेथ की उपमा देते हैं। तो सोनिया गांधी की देश के लिए उपलब्धि मात्र राजीव गांधी के साथ शादी करना और दो बच्चे पैदा करने कहते हैं। समाचार पन्नों पर यह समाचार भी छपवाते हैं। 'एक और मुख्यमंत्री' का अरविन्द अपनी विरोधी राजनेता शची को बदनाम करने के लिए 'सूर्ख सबेरा' के संपादक पटनायक को बुलाकर शची के पति के एक शिक्षिका के साथ सम्बन्धों को बड़ी खबर बनाकर छपवाने का आदेश देते हैं। पटनायक अरविन्द का आश्रित है। अरविन्द उसे कहते हैं, 'पटनायक ! एक शिक्षिका ने मुझे यह सूचना दी है कि महेन्द्र का रजनीगंधा से अनुचित सम्बन्ध है और इस घटना ने महेन्द्र और शची के बीच कुछ खिंचाव पैदा कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि तुम शची को मानसिक रूप से आघात दो। कुछ नये तथ्य और लाओ। तुम विमल गुप्ता से मिल लेना। सारी घटना को सुनकर सनसनी ढंग से प्रस्तुत करो। पटनायक ने धीरे से हँसते हुए कहा, ''यह मेरे बायें हाथ का खेल है। आप निश्चिंत रहिए। दूसरे दिन 'सूर्ख सवेरा' में महेन्द्र और रजनीगंधा की प्रेम कहानी छपकर आयी और पूरे राज्य में हलचल मच गयी।''[4]

आज के युग में सभी का अवमूल्यन हो रहा है। मानवीयता और आदर्श शब्द शब्दकोश में बंद हो गए हैं। आज वस्तुओं पर मूल्य नहीं लिखे होते, व्यक्तियों पर लिखे होते हैं। आज के पत्रकार पैसों से खरीदे जाते हैं। हर पत्रकार की दरें अलग–अलग हैं। उनको कभी वस्तु देकर तो कभी धन देकर खरीदा जाता है। 'दण्ड विधान' में मुद्राराक्षस कहते हैं, ''मुख्यमंत्री तुरन्त एक नया निदेशक ले आये। उसके पास गुप्त रूप से खर्च किये जाने वाले धन की राशि भी बढ़ा दी गयी। अब सरकार मद्य निषेध कार्यालय पर होने वाले कुछ खर्च से ज्यादा पैसा उन गाड़ियों और होटलों पर खर्च करने लगे, जिसमें पत्रकार अच्छी शराब पाकर विकास के बारे में सरकार की उपलब्धियों पर सकारात्मक सम्मेलन भी हुआ। इस सम्मेलन में बहुत सादा नाश्ता था, सिर्फ चाय और नमकीन बिस्कुट। लेकिन पत्रकारों के चेहरे उतरे नहीं थे। दो सौ ग्यारह पत्रकारों के लिए दो सौ पच्चीस उम्दा कलाई घड़ियाँ बेहतरीन डिब्बों में लिपटी हुयी थीं।''[5]

आज पत्रकारों को कभी उपहार के रूप में तो कभी धन के रूप में रिश्वत देकर, उनसे मनचाहा लिखवा लिया जा रहा है। पत्रकारों ने ब्लैक मेलिंग का नया धंधा शुरू किया है। वे भ्रष्ट अधिकारियों, नेताओं को अपने चंगुल में फंसाकर उनको लूटने का कार्य भी करते हैं। 'परती परिकथा' में संपादक श्री निडर पटनियाँ का 'हुआ सवेरा' प्रान्त का प्रमुख गीलीबाज साप्ताहिक पत्र है। इस पत्र के माध्यम से निडर पटनियाँ लोगों को ब्लैकमेल करते हैं। उनके टेलीफोन का रुपया आप चुका दें। उन्होंने जब नकार दिया तो दूसरे दिन ही 'हुआ सवेरा' में खबर छपवा दी कि शराब के नशे में धुत मिस नारायण मेजरबाग में पड़ी हुई पायी गयीं। मिस साहिबा के कपड़े फटे हुए थे, बाल अस्तत थे। लगता है, उसके किसी प्रेमी ने रात्रि विहार ....। ''बदनामी के कारण मि. नारायण को नौकरी छोड़नी पड़ी। संपादक को डेढ़ हजार रुपये देकर दूसरी खबर छपवानी पड़ी कि पिछले सप्ताह मेजरबाग में बेहोश बड़ी लड़की का नाम मिस नारायण नहीं मिस राय है।''[6]

आज के जनतांत्रिक शासन–व्यवस्था में प्रेस स्वतंत्रता के विरुद्ध ऊँचे–स्तर पर बड़े–बड़े अभियान चलाये जा रहे हैं। कोई प्रेस आदि निर्भीकता से कुछ तथ्य सामने लाने का प्रयास करता है, जिससे अगर सत्ता की साख घट रही हो तो प्रेस की इमारत के दुरुपयोग के आरोप लगवाकर प्रेस को बंद करने का षड़यंत्र रचा जाता है। कभी–कभी गुंडों के सहारे से प्रेस को जलाया जाता है या पत्रकारों पर हमले करवाये जाते हैं।

''स्वराज जिन्दाबाद'' का दीपक कहता है, ''बड़े भाई'' आज राजनीति बहुत छोटे स्तर पर उतर आई है। छोटे मंत्री छोटे व्यक्तियों पर हावी हो रहे हैं और बड़े मंत्री प्रेस का गला दबाना चाहते हैं। दिल्ली में क्या हो रहा है, एक और बहुउद्योगी प्रतिष्ठानों के समाचार पत्रों के बड़े–बड़े संपादक बदले जा रहे हैं तो दूसरी ओर प्रेस पर और प्रेस के मालिकों पर छापे मारे जा रहे हैं।''[7]

आज समाचार–पत्र तथा पत्रकारों की संख्या काफी बढ़ गयी है। किसी युवक को अगर जीविका का अच्छा साधन नहीं मिलता तो वह पत्रकार बन जाता है। पत्रकारिता उपजीविका का साधन बन गयी है। स्वातंत्र्योत्तरकालीन पत्रकारों में यह भावना नहीं थी। वे जनसेवा और देशसेवा के लिए पत्रकारिता करते थे। लक्ष्मीनारायण गर्दे लिखते हैं– ''अनेक कठिनाइयों में भी हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने वाली एक ही चीज थी वह थी हमारी स्पिरिट। हमारे समय के अधिकांश हिन्दी पत्रकार इस क्षेत्र में केवल इसलिए आये कि वे देश की कुछ सेवा करना चाहते थे।''[8]

समकालीन राजनीति में प्रसार माध्यमों को अधिक महत्व प्राप्त हो गया है। प्रसार माध्यमों के सहारे ही राजनेता अपनी छवि निर्माण करने का प्रयास करते हैं। इसीलिए राजनेता समाचार–पत्रों से अच्छे सम्बन्ध बनाते हैं। समाचार–पत्रों को विज्ञापन देना, पत्रकारों को पुरस्कार देना, पार्टियाँ देना आदि हथखण्डों के सहारे राजनेता संपादकों और पत्रकारों से स्नेह भरे सम्बन्ध निर्माण करते हैं। ''एक और मुख्यमंत्री'' का अरविन्द सफल राजनेता बनना चाहता है। वह जनता में अपनी छवि निर्माण करने के लिए समाचार–पत्रों का सहारा लेता है। वह अपने एक शिष्य से कहता है, ''अब इस तरह से काम नहीं चलेगा। हर जाति और हर वर्ग में अपना एक आदमी रखना होगा। अब हमें हमेशा प्रशासक तथा प्रजा के कर्तव्यों को केन्द्र में रखकर भाषण देने होंगे और विज्ञाप्तियाँ प्रसारित करनी होगी। राज्य में शान्ति स्थापना, सुव्यवस्था, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य समाज सुधार, आर्थिक समानता के नारे लगाने होंगे। अब हमें अपना दायरा विस्तृत करना होगा।''[9]

लोकतंत्र के विकास में व्यक्ति स्वातंत्र्य की कल्पना को साकार करने का महत्वपूर्ण काम समाचार–पत्रों का है। वे सामान्य जनता तक चारों ओर कम समय में कम कीमत पर घटना जानकारी विचार पहुंचाने का कार्य करते हैं। केवल रुचि के लिए नहीं जीवन की आवश्यकता के लिए भी प्रतिदिन समाचार–पत्र पढ़ना आवश्यक है। समाचार–पत्रों के सहारे संसार भर की प्रमुख घटनाओं की जानकारी घर बैठे ही मिलती है। अपने देश की व्यवस्थाओं, सरकारी नीतियों और बड़े–बड़े नेताओं के भाषण तथा नगर के प्रमुख समाचारों का ज्ञान हमें घर बैठे ही मिल जाता है। आम जनता की भाव–भावनायें भी समाचार–पत्रों के माध्यम से शासन तक पहुँचायी जाती हैं। आजादी की लड़ाई हो या समाज परिवर्तन, मानव के सर्वांगीण जीवन को दिशा निर्देश करने का काम समाचार–पत्र करते हैं।

राजनीति में समाचार–पत्र जनमत तैयार करने का कार्य करते हैं। महाराष्ट्र में जनमत तैयार करने का काम महाराष्ट्र टाइम्स, दैनिक लोकमत, सकाल, महानायक, जनशक्ति, सामना आदि समाचार–पत्र करते हैं, उत्तर भारत में इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक जागरण, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा आदि यह जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। दक्षिण भारत में 'हिन्दू' जैसे अनेक समाचार–पत्र जनमत तैयार कर रहे हैं। आज हर दलों ने अपने–अपने समाचार–पत्र शुरू किये हैं। ''कांग्रेस के अनुकूल जनमत तैयार करने का कार्य कांग्रेस के सांसद राजेन्द्र दर्डा के दैनिक लोकमत, लोकमत समाचार और लोकमत टाइम्स कर रहे हैं तो राष्ट्रवादी कांग्रेस के लिए जनमत तैयार करने का काम शरद पवार का 'सकाल' कर रहा है। कमल किशोर कदम भी अपने ''लोकपत्र' दैनिक से कांग्रेस के विचार जनता तक पहुँचा रहे हैं। महाराष्ट्र में भाजपा का 'तरुण भारत' और शिवसेना का 'सामना' अपने दलों की वफादारी कर रहे हैं।''[10]

प्रामाणिकता से देखा जाय तो समाचार–पत्रों का सबसे पहला कर्तव्य समाज प्रबोधन है। सामाजिक प्रबोधन में उन्हें प्रमुख भूमिका अदा करनी चाहिए। ''महाभोज के दा साहब कहते हैं, ''अखबारों को आजाद रहना चाहिए। वे तो हमारे कामों का हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो।''[11]

समाचार–पत्र नेताओं, मंत्रियों के कामों का लेखा–जोखा जनता के सामने पेश करते हैं, जिसके बलबूते पर जनमत राजनेताओं की ओर झुक जाता है। जनता में राजनेताओं की लोकप्रियता बढ़ जाती है और वे भारी मतों से विजयी हो जाते हैं।

समकालीन उपन्यासकारों ने राजनेताओं की स्वार्थ नीति को जनता के सामने उजागर करने का प्रयास किया है। मेरा मानना है कि यदि देश में संचार माध्यम तटस्थ, निष्पक्ष, राष्ट्रहित, जनहित तथा प्राणीलोक के कल्याणार्थ कार्य करें तो देश का सर्वांगीण विकास तीव्र गति से होगा। देश की छवि बिगाड़ने में राजनेता और संचार माध्यम की भूमिका को प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

विश्वनाथ मिश्र 'दांव–पेंच' में कहते हैं, ''आजकल के अखबार भी अपने मूल उद्देश्यों से बहके हुए हैं, जितना पक्षपात और गुटबंदी इनमें है, कहीं नहीं मिलेगी। सच तो यह है कि देश को दिशा देने में इनका सबसे बड़ा हाथ होता है। अब तक ये देश को नई दिशा नहीं दे सके, बस वही पुराने सिक्कों की तरह घिस–पिटकर चलते रहे। इनका भी मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक हो गया है। जिस पार्टी का जोर हुआ, जिसका शासन हुआ, जिधर से माल दबाने का अवसर मिला ये उधर हो जाते हैं या किसी के लिए दो–चार शब्द लिखकर रुपये ऐंठने की युक्ति काम में लाते हैं। शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित रखने में इनका कितना उपयोग रहता है कोई नहीं जानता। साफ–सुथरा सही समाचार देना शायद इनकी नीति के प्रतिकूल हो जाता है।''[12]

समकालीन प्रवेश में समाचार–पत्रों का मूल उद्देश्य समाज प्रबोधन है। पर आज समाचार–पत्र अपना मूल उद्देश्य ही भूल गये हैं। शासन की हाँ में हाँ मिलाकर सरकारी विज्ञापन प्राप्त करना, अनुदान प्राप्त करना तथा नेताओं के गुण–गान गाकर लाखों रुपये कमाना उनका प्रमुख उद्देश्य बन गया है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः आज धन से विचार–विक्रय करने का रोग पत्रकारिता में घुस रहा है। आज के पत्रकारों में धन की भूख प्रबल है, इसलिए वे पीड़ित हैं और खतरों से घिरे हुए हैं। अपने देश में श्री मोतीलाल घोष, लोकमान्य तिलक, डॉ. अम्बेडकर, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे पत्रकार और संपादक नहीं हैं। आज पत्रकारों में अर्थलिप्सा के बढ़ जाने से निष्ठा का लोप होता गया है। पहले पत्रकार और संपादक अध्ययनशील होते थे और जिन विषयों को नहीं जानते थे या कम जानते थे उनके सम्बन्ध में अधिक–से–अधिक जानकारी अपने पाठकों को देने का यत्न करते थे। आज के समाचार–पत्रों में वही घिसी–पिटी बातें, उबाने वाले लेख, खून, बलात्कार, डकैती के लिये हुए समाचार पढ़ने की इच्छा नहीं होती। आज हर समाचार–पत्र किसी–न–किसी दल से सम्बन्धित है। वे मात्र अपने दल के राजनेताओं का गुनगान गाना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। इसीलिए आज के समाचार पत्र को कल की रद्दी समझा जाता है।

संदर्भ –

[1] कैलाश कल्पित – स्वराज जिन्दाबाद, पृष्ठ 107
[2] डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र – हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ 451
[3] डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र – हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ 444.
[4] यादवेन्द्र शर्मा – एक और मुख्यमंत्री, पृष्ठ 322
[5] दण्ड विधान–मुद्राराक्षस, पृष्ठ 96
[6] फणीश्वरनाथ रेणु – परती परिकथा, पृष्ठ 73
[7] कैलाश कल्पित – स्वराज जिन्दाबाद, पृष्ठ 111
[8] डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र – हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ 446
[9] यादवेन्द्र शर्मा – एक और मुख्यमंत्री, पृष्ठ 81
[10] शांताराम भोगले – राजकीय संस्था, पृष्ठ 156
[11] मन्नू भंडारी – महाभोज, पृष्ठ 19
[12] विश्वनाथ मिश्र – दाँवपेंच, पृष्ठ 59